

हिंदी भाषा और पूर्वोत्तर भारत : कल, आज और कल

-मीनाक्षी

पूर्वोत्तर भारत वर्तमान में आठ राज्यों से मिलकर बना है। सिक्किम को छोड़कर अन्य सात राज्यों को 'सात बहनें' के नाम से भी जाना जाता है। यह 'सात बहनें' की संज्ञा सर्वप्रथम असम के एक सिविल सेवक ज्योति प्रसाद साइकिया ने दी थी। पूर्वोत्तर भारत में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा का प्रयोग होता रहा है किंतु इसके अतिरिक्त यहाँ पर विभिन्न भाषाओं और बोलियों का प्रचलन है जैसे असमिया, नेपाली, मणिपुरी, बांग्ला, गारो, खासी, लेपचा आदि। मुनीन्द्र मिश्र लिखते हैं कि "पूर्वोत्तर भारत एक भाषाई क्षेत्र है जहाँ विभिन्न भाषा परिवारों यथा भारोपीय, साइनो तिब्बतन, ताई कादाई, आग्नेय समूह की 220 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं।"

'वर्ल्ड लैंग्वेज डाटाबेस' के 22वें संस्करण इथोनोलॉज के अनुसार विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली 20 भाषाओं (जिसमें छः भारतीय भाषाओं को भी स्थान मिला है) में हिंदी तीसरे स्थान पर है संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को शामिल किया गया है, जिसमें हिंदी, असमिया, बोड़ो, मणिपुरी, बांग्ला भी आती हैं। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार- "हिंदी विश्व की महान भाषा है।" ऐसा माना जाता है कि जिस भाषा की लिपि देवनागरी होती है उस भाषा के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार किया जा सकता है। जैसे अरुणाचल प्रदेश की भाषा 'मोनपा', 'मिजि' और 'अका', असम में 'मिरि', 'मिसमि' और 'बोड़ो', नागालैण्ड में 'अडागी', 'सेमा', 'लोथा', 'रेग्मा', 'चाखे तांग फोम' तथा 'नेपाली' है, सिक्किम में 'नेपाली', 'लेपचा', 'भडपाली', 'लिम्बू' आदि भाषाओं की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि के संदर्भ में प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी लिखते हैं कि- "देवनागरी लिपि पूर्वाचल की भाषाओं के लिए अधिक उपयुक्त है। देवनागरी की एक विशेषता है कि इन भाषाओं की ध्वनि प्रक्रिया को देवनागरी लिपि में समायोजित किया जा सकता है। देवनागरी लिपि की विस्तृत वर्णमाला में भारत की अनेक भाषाओं की ध्वनियों को उसके भीतर समेटा जा सकता है और समेटा भी गया है। यह लिपि पूर्वाचल की भाषाओं को एक सूत्र में बाँध सकती है और इससे पूर्वाचल की भाषाओं तथा संस्कृतियों का प्रसार और विकास होगा।"

पूर्वोत्तर भारत अहिंदी भाषी क्षेत्र है। संविधान सभा में संविधान बनाते समय भारत के दक्षिण और पूर्वोत्तर राज्यों को भाषाई आधार पर गैर हिंदी मानते हुए इन्हें 'ग' श्रेणी में रखा गया था किन्तु व्यावहारिक तौर पर ऐसा नहीं है। यहाँ के लोग पर्याप्त मात्रा में हिंदी भाषा बोलते और समझते हैं। आर. के. सिन्हा अपनी पुस्तक 'बात बोलेगी हम नहीं' में लिखते हैं कि- "इन राज्यों में सेना सुरक्षा के जुड़े हुए जवान व्यापार के लिए हिंदी क्षेत्रों से जाकर इन राज्यों में बस जाने वाले व्यापारी, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार से काम के सिलसिले में आठ राज्यों में आए हुए मजदूरों के कारण यहाँ हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार हुआ।"

इस प्रकार प्रो. गिरीश्वर मिश्र 'मातृभाषा हमारा अधिकार है' (हिंदी समय) में लिखते हैं कि "भाषा की सत्ता उसके प्रयोग से बनती है और उससे आदमी इस कदर जुड़ जाता है कि वह उसके अस्तित्व की निशानी बन जाती है।"

पूर्वोत्तर भारत में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को लेकर बजरंग बिहारी तिवारी का मानना है कि "हिंदी का प्रचार-प्रसार महात्मा बुद्ध के द्वारा पूर्वोत्तर में हुआ था। साथ ही शंकरदेव और माधवदेव आदि के द्वारा भी पूर्वोत्तर में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के समय में पूर्वोत्तर में हिंदी का प्रसार महात्मा गांधी के समय से माना जा सकता है। अतः पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की शुरुआत औपचारिक रूप से सन् 1934ई. में हुई जब महात्मा गांधी ने असम में 'अखिल भारतीय हरिजन सभा' की स्थापना की और एक जनसभा में अपने संबोधन से लोगों को हिंदी सीखने के लिए कहा। उस दौरान माजुली के एक सत्राधिकार श्री श्री पीतांबर देव गोस्वामी जी ने बताया कि "यहाँ हिंदी सिखाने वालों की कमी है। अतः इसकी व्यवस्था हो जाए तो हम हिंदी शिक्षण- प्रशिक्षण के कार्यक्रम को शुरू कर सकते हैं।" उनके इस आग्रह पर महात्मा गांधी ने बाबा राघव दास को हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य सौंप कर असम भेजा।

बाबा राघव दास ने असम पहुँच कर कुछ हिंदी भाषी लोगों को हिंदी शिक्षण के लिए नियुक्त किया जिसमें मुख्य रूप से जोरहाट से अम्बिका प्रसाद त्रिपाठी, डिब्रूगढ़ से शिव सिंहासन मिश्र, शिवसागर से सूर्यवंसी मिश्र, नवगाँव से देवेन्द्र दत्त शर्मा, गुवाहाटी से धनेश्वर शर्मा और गोलाघाट से बैकुंठनाथ सिंह थे। ये प्रशिक्षित अध्यापक तो नहीं थे किंतु असमिया भाषा जानते थे और व्याकरण अनुवाद पद्धति उनका माध्यम था। उस दौरान कुछ असमिया युवक- युवतियाँ 'काशी विद्यापीठ' जैसे राष्ट्रीय संस्थान में अध्ययन के लिए गए। जिसमें नवीनचंद्र कलिता, खर्गेश्वर मजूमदार का नाम उल्लेखनीय है। बाबा राघवदास के आश्रम में रजनीकान्त चक्रवर्ती और हेमकांत भट्टाचार्य जी हिंदी सीख रहे थे। बाद में नवीनचन्द्र जी भी आ गए। फिर इन तीनों को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा संचालित 'हिंदी अध्यापन मंदिर' में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। इन तीनों को ही असम में हिंदी शिक्षण का पुरोधा माना जा सकता है। प्रशिक्षण समाप्त कर श्री नवीनचंद्र कलिता जी को गुवाहाटी, श्री रजनी कान्त चक्रवर्ती जी को शिवसागर और हेमकांत भट्टाचार्य जी को नवगाँव के प्रचारक के रूप में नियुक्त किया गया। इन महानुभावों के उत्साह और प्रेरणा से ही पूर्वोत्तर भारत के विद्यालयों में हिंदी भाषा की नींव पड़ी।

असम

सन् 1938ई. में 'हिंदी प्रचार समिति' की स्थापना गुवाहाटी में हुई थी। बाद में उसे 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' के नाम से जाना जाता है, जो आज भारत के श्रेष्ठ हिंदी स्वैच्छिक संस्थानों में से एक है। डॉ. श्रुति पांडेय के अनुसार- "पूर्वोत्तर में हिंदी साहित्य एवं संवेदना के विकास का केंद्र मुख्यता असम ही रहा है। श्री कमल नारायण देव, डॉ. वीरेंद्र कुमार बरुआ, डॉ. मणिकांत कांपती, और डॉ. हरीशचंद्र देव शर्मा जैसे

विद्वानों ने असमिया तथा हिंदी साहित्य को करीब लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके साथ ही डॉ. हीरालाल तिवारी और डॉ. कृष्ण नारायण प्रसाद मागध इत्यादि के प्रयास से भी हिंदी साहित्य का विकास क्षेत्र में स्थायित्व प्राप्त कर सका।"

असम के न्यू बोगाईगाँव नामक जनपद मुख्यालय में बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में 31वीं वाहिनी पी.ए.सी. के सेनानायक डॉ. अजित कुमार सिंह ने पूर्वोत्तर भारत में हिंदी के प्रयोग एवं व्यवहार के सम्बन्ध में अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि "पूर्वोत्तर भारत में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति लगाव में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। बोंगाई गाँव, कोकराझार, धुबरी, रंगिया, गौहाटी एवं शिलॉन्ग में ही नहीं वरन् दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में भी हिंदी बोलनेवाले और समझनेवाले पर्याप्त संख्या में मिले। पूर्वोत्तर भारत में हिंदी समझने एवं जानने वाले तथा बोलने वाले की संख्या पर्याप्त है। हमारी वाहिनी के कर्मचारीगण जो मात्र हिंदी भाषी थे, वे दूरस्थ वन क्षेत्रों तक में नियुक्त थे। बाजार से सामान क्रय करने एवं एक-दूसरे की भावनाओं के आदान प्रदान में उन्हें कहीं भी निराश नहीं होना पड़ा।"

पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में 'केन्द्रीय हिंदी संस्थान' का योगदान उल्लेखनीय है। इसके तीन केन्द्र गुवाहाटी, शिलॉन्ग तथा दीमापुर अपने अपने कार्य क्षेत्रों के राज्यों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के विशेष कार्यक्रम चलाकर हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हिंदी अध्यापकों के लिए आवश्यकतानुसार एक सप्ताह से लेकर चार सप्ताहों की लघु अवधि के नए पाठ्यक्रमों का संचालन करते हैं। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से अध्यापक भाषा-शिक्षण की पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त कर अपने स्कूलों में उन विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ाते हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है तथा पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों को हिंदी सीखते समय होने वाली कठिनाइयों का समाधान किस प्रकार किया जाए, इसका ज्ञान प्राप्त करते हैं। गुवाहाटी केन्द्र के कार्यक्षेत्र असम, अरुणाचल प्रदेश एवं सिक्किम, शिलॉन्ग के केन्द्र का कार्यक्षेत्र मेघालय, त्रिपुरा एवं मिजोरम और दीमापुर के केन्द्र का कार्यक्षेत्र नागालैण्ड एवं मणिपुर है।

मणिपुर

मणिपुर में हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य वर्ष 1928ई. में 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के द्वारा प्रारम्भ हुआ और उसके बाद कुछ वर्षों के पश्चात् यहाँ 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' वर्धा ने अपनी शाखा खोल दी। वर्ष 1953ई. में 'मणिपुर हिंदी परिषद्', इम्फाल की स्थापना हुई तथा एक वर्ष के पश्चात् सन् 1954ई. में इस संस्था ने हिंदी की परीक्षाएँ लेना प्रारंभ किया। इसकी स्थापना की शुरुआत श्री मणिस्ना शर्मा शास्त्री द्वारा बुलाई गई बैठक से हुई, जिसमें नीलवीर शास्त्री, भागवत देव शर्मा और चन्द्रमणि सिंह आदि उपस्थित थे। मणिपुर की दूसरी संस्था 'मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' है। मणिपुर में हिंदी के प्रचारक के रूप में जिन लोगों का नाम लिया जाता है वे इस प्रकार हैं- लाइयुम ललित माधव शर्मा, टी.वी. शास्त्री फु. गोकुलानंद, एन. तोम्बीसिंह, हेमाम, नीलमणि सिंह, अरिबम पंडित राधा मोहन शर्मा, क. हिमाचार्य शर्मा, एस. नीलवीर शर्मा शास्त्री, अरिवम घनश्याम शर्मा, राधागोविंद थोडाम, कालाचाँद शास्त्री, नन्दलाल शर्मा, नवीन चाँद,

सिजगुरुमयुम लाइमयुम नारायण शर्मा, फिराइलात्पम पंडित जगदीश शर्मा और द्विजमणि देव शर्मा। इसके अतिरिक्त मणिपुर विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना की गई और वहाँ पर हिंदी में पीएच.डी. भी कराई जाती है और वहाँ पर पुस्तकालय की भी व्यवस्था की गई है। हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु संगोष्ठियाँ भी आयोजित की जाती हैं और उसमें हिंदी के विभिन्न विद्वानों को उनके वक्तव्य सुनने के लिए आमंत्रित किया जाता है। "पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में मणिपुर ऐसा राज्य है, जिसने हिंदी भाषा और उसके साहित्य का स्वागत राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय आवश्यकता के संदर्भ में किया है। हिंदी एक भाषा ही नहीं है बल्कि वह भावात्मक एकता को प्रवाहित करने वाली धारा है। इसी भावना के फलस्वरूप मणिपुर में आज ऐसे सैंकड़ों छोटे- बड़े हिंदी लेखक- लेखिकाएँ हैं, जो पूरे अधिकार के साथ हिंदी भाषा में मातृभाषा की तरह साहित्य रचना करते हैं। मणिपुरी भाषी हिंदी लेखक अपने सृजनात्मक साहित्य द्वारा हिंदी साहित्य की परंपरा के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण स्थान बनाते जा रहे हैं। वहाँ पर हिंदी में मौलिक सृजन भी हो रहा है तथा अनुवाद, कार्य भी चल रहा है। साथ ही हिंदी की कई पत्रिकाएँ जैसे महीप, कुंदोपरेड, युमशकेश, लटचम आदि प्रकाशित हो रही हैं।"

कुछ लेखकों ने हिंदी में मौलिक लेखन, पाठ्य- पुस्तक निर्माण, मौलिक रचनात्मक लेखन, अनुवाद के साथ हिंदी पत्रकारिता का कार्य शुरू किया तथा वहाँ के वाचिक साहित्य को भाषांतरित कर हिंदी में प्रस्तुत किया। नागालैण्ड

नागालैण्ड में हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्य के लिए 'नागालैण्ड राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' कार्यरत है। यहाँ पर असमिया तथा हिंदी के मेल जोल से तैयार समन्वित भाषा का चलन समय के साथ बढ़ता जा रहा है। जिसे नागालैण्ड के लोग 'तेजीदिए' के नाम से पुकारते हैं और अंग्रेजी के ग्रंथों की देखा देखी में 'नागामीज' कहा जाता है। इसमें मौसम, प्रार्थना, अंग आदि अनेक हिंदी शब्दों का प्रयोग होता है तथा हिंदी फिल्मों के संवादों तथा गानों में प्रयुक्त शब्दों का चलन भी बढ़ता जा रहा है। 'केन्द्रीय हिंदी संस्थान', नागालैण्ड द्वारा वर्ष 1972ई. में प्रमुख हिंदी सेवक ब्रज बिहारी कुमार के द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिवर्ष नागालैण्ड से बीस तीस हिंदी अध्यापक आगरा आकर प्रशिक्षण के बाद अपने यहाँ 'हिंदी के राजदूत' बनकर लौटते हैं। उसके पश्चात् सन् 1992-1998ई के बीच 'केन्द्रीय हिंदी संस्थान' ने हिंदी शिक्षण डिप्लोमा पाठ्यक्रम की पाठ्य-पुस्तक का संशोधन एवं परिवर्द्धन करके उसकी पाण्डुलिपि प्रकाशन के लिए नागालैण्ड सरकार को सौंप दी। नागालैण्ड शिक्षा बोर्ड ने कक्षा 9वीं से कक्षा 10वीं तक के लिए हिंदी पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हुआ। उसके पश्चात् के. फ्योखामो लोधा को 'हिंदी-अंग्रेजी-लोथा शब्दावली और शब्दकोश' बनाने के लिए प्रेरित किया तथा कार्य सम्पन्न होने पर उसको प्रकाशित करने के लिए सहमति दी और अंगामी द्विभाषी शब्दकोश भी प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त प्रसारण के लिए 'नागालैण्ड' राष्ट्रीय प्रसारण कार्यक्रम तैयार करता है। हिंदी के साधक एवं महात्मा गांधी के परम भक्त श्री पी.टी. जामीर (दीमापुर) ने अपना सम्पूर्ण जीवन नागालैण्ड में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। विद्या भारती नागालैण्ड के कुछ वर्ष अध्यक्ष भी रहे हैं और राष्ट्रीय स्तर पर

अनेक पुरस्कारों से सम्मानित भी हुए हैं. जिसमें उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री 'भाऊराव देवरस राष्ट्रीय सम्मान' भी मिला है। मिजोरम

मिजोरम में हिंदी के प्रचार का कार्य श्री दारछोना के द्वारा प्रारंभ हुआ। 'केन्द्रीय हिंदी संस्थान' ने सन् 1998- 99ई. में वहाँ के हिंदी सीखने वालों की सुविधा के लिए 'हिंदी- लुशाई शब्दकोश' का निर्माण किया जो कि प्रकाशित हो चुका है। संस्थान के द्वारा मिजोरम राज्य की पाँचवीं कक्षा से लेकर आठवीं कक्षा तक की पाठ्यपुस्तकों का संशोधन कार्य भी सम्पन्न किया तथा उनकी पाण्डुलिपियाँ राज्य सरकार को सौंप दी। मिजोरम में संस्थान की हिंदी की प्रोफेसर डॉ. इंजीनियरी जेनी ने 'पूर्वाचलीय हिंदी साहित्य' पर शोध कार्य किया तथा आर. एल. धनमोया एवं ललथलमुआनो द्वारा 'हिंदी- मिजो शब्दकोश' प्रकाशित हुआ।

मेघालय

मेघालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए वर्ष 1976ई. में हिंदी संस्थान के शिलॉन्ग केन्द्र की स्थापना हुई। इसके अतिरिक्त शिलॉन्ग में ही हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु एक राष्ट्रभाषा विद्यालय भी खोला गया और यहाँ के विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति की भी व्यवस्था की गई। हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से इसने काफी लोकप्रियता हासिल की। मेघालय की अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं में 'मेघालय हिंदी प्रचार परिषद', शिलॉन्ग और पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी' भी आती हैं। इसमें 'पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी' की स्थापना सन् 1990ई. में हुई और इसे सन् 2003ई. में सरकारी मान्यता प्राप्त हुई। यह संस्था परिचय, प्रथमा और प्रवेशिका का शिक्षण कराती है। संस्थान ने मेघालय के सरकारी स्कूलों के पाँचवीं कक्षा से आठवीं कक्षा तक की पुस्तकों का निर्माण किया है। 'केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा' से डॉ. रमा सूद और डॉ. मीरा सरीन द्वारा संपादित 'हिंदी खासी द्विभाषी कोश' प्रकाशित है।

त्रिपुरा

त्रिपुरा में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' वर्धा द्वारा 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति', धर्मनगर की स्थापना की गई। इसके लगभग दस केंद्र संचालित हैं। यहाँ पर प्राथमिक, प्रारंभिक, प्रवेश, परिचय परीक्षाएँ होती हैं। इसके अतिरिक्त 'त्रिपुरा राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' एक अन्य संस्था है। त्रिपुरा विश्वविद्यालय (जो अगरतला में स्थापित किया गया) में हिंदी विभाग है। रामेन्द्र कुमार पाल ने हिंदी प्रचारक के रूप में उल्लेखनीय कार्य किए हैं। वर्तमान में पूर्वांचल में सौ से भी ज्यादा हिंदी विद्यालयों का संचालन हो रहा है। जहाँ बहुत से छात्र-छात्राएँ हिंदी में अपनी पढ़ाई पूरी कर रोजगार भी प्राप्त कर रहे हैं।

अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश में सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग होता है तथा सरकारी कामकाज के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता है नई पीढ़ी के लोगों में हिंदी ही ज्यादा प्रचलित है। 14 सितंबर, 1974ई. को वहाँ के मुख्यमंत्री श्री खुगन की उपस्थिति में 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की स्थापना की। इसके अतिरिक्त लखीमपुर में 'राष्ट्रभाषा महाविद्यालय' की शुरुआत हुई। उसके अंतर्गत कोविद एवं रत्न की परीक्षा होती है। अरुणाचल प्रदेश 'हिंदी समिति' हिंदी की अन्य स्वैच्छिक संस्था है। 'राजीव गांधी विश्वविद्यालय' की स्थापना भी की गई। वर्ष 1956ई. में 'नेफा' में केन्द्र सरकार के प्रशासनिक आदेश के द्वारा विद्यालयों में हिंदी पढ़ाना अनिवार्य कर दिया गया। डॉ. जोराम यालम नाबम द्वारा रचित कहानी संग्रह 'साक्षी है पीपल' अरुणाचल के साहित्यकार द्वारा हिंदी में किया गया पहला सृजनात्मक प्रयास है। जिसमें समाज में व्याप्त अरुणाचल की स्त्रियों के जीवन संघर्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। वीरेंद्र परमार के अनुसार "अरुणाचल की 25 प्रमुख जनजातियों की अलग-अलग भाषाएँ हैं लेकिन सभी लोग संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करते हैं, यहाँ तक की विद्यालयों महाविद्यालयों में भी माध्यम भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग किया जाता है।"

ईटानगर के युवाकवि एवं अध्यापक श्री तारो सिदिक व डॉ. जोराम आन्य ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में कार्य किया।

सिक्किम

सन् 2007ई. में सिक्किम में 'केंद्रीय विश्वविद्यालय' की स्थापना और 'नॉर्थ ईस्ट रीजनल लैंग्वेज सेंटर' के माध्यम से 'लिंग्विस्टिक एंड कल्चरल डॉक्यूमेंटेशन ऑफ सिक्किम से हिंदी के प्रचार-प्रसार में बढ़ोतरी हुई। कुछ स्कूल ऐसे स्थापित हुए थे जिनमें हिंदी पढ़ने-पढ़ाने का कार्य शुरू हुआ। पर्यटन में निरंतर विकास को देखते हुए लोगों ने हिंदी सीखने का प्रयत्न किया।

इसके अतिरिक्त कुछ समाचार पत्रों की शुरुआत भी हुई हिंदी भाषा का पहला पत्र डिब्रूगढ़ से श्री विश्वेश्वर दत्त शर्मा द्वारा संपादित प्रकाश सन् 1919ई में निकला, परंतु हिंदी पत्रकारिता में एक क्रांतिदेखने को मिलती है सन् 1939ई. में जब नव जागृति तथा उसके बाद अकेला, नवीन समाज, शंखनाद, पूर्व ज्योति, रणभेरी, जागृति, जय हिंद इत्यादि पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ होता है। मणिपुर से कामाख्या न्यूजलेटर आधुनिक जैसे पत्रों का प्रकाशन हुआ। असम के गुवाहाटी से प्रकाशित समाचार पत्र दैनिक पूर्वोदय, पूर्वाचल प्रहरी, प्रातः खबर, सेंटिनल, सिचलर से प्रकाशित प्रेरणा भारती, अरुणाचल से प्रकाशित अरुणभूमि का प्रकाशन हुआ। इसके अतिरिक्त अरुण प्रभा, अरुण ज्योति, मेघालय दर्पण, रूपांजलि. श्रोता वाणी, पूर्वाशा आदि पत्र पत्रिकाएँ हैं।

सरकारी एवं गैर सरकारी सभी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग में काफी वृद्धि देखने को मिल रही है। कुछ संस्थाएँ जैसे नागरी लिपि प्रचार सभा इंफाल, मणिपुर ट्राइबल्स हिंदी सेवा समिति, शब्द भारती, ईटानगर साहित्य सभा और अरुणाचल नागरी संस्था आदि से भी हिंदी का काफी प्रचार-प्रसार हुआ। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं प्रिंट मीडिया में भी हिंदी का प्रयोग मिलने लगा। प्राचीन काल में महापुरुष शंकरदेव तथा उनके समसामयिक अन्य रचनाएँ ब्रज भाषा में हुईं। इस प्रकार पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी का संपर्क पूर्वोत्तर की सभी भाषाओं के साथ देखने को मिलता है। कमलापति त्रिपाठी के अनुसार "हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।"

पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की शुरुआत किस प्रकार हुई और समय-समय पर उसका विकास किस प्रकार हुआ इसके बाद यह समझना भी आवश्यक है कि आने वाले समय में पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की क्या स्थिति होगी अथवा क्या होनी चाहिए। इस पर विचार करते हुए सुश्री एल डिंपल देवी का मानना है कि "हिंदी भाषा शिक्षण के माध्यम से छात्रों में सांस्कृतिक बोध विकसित किया जाए। हिंदीतर प्रदेशों में छात्रों के लिए हिंदी भाषा शिक्षण का पहला सोपान संभाषण है। प्रथम भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करने वालों के साथ विद्यार्थियों का सम्पर्क बढ़ाया जाय तथा हिंदी भाषी व्यक्तियों के साथ सजीव संपर्क स्थापित करने की सुविधा विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जाए।"

इस प्रकार पूर्वोत्तर भारत के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में डॉ. विद्याश्री का मानना है कि "व्यक्तित्व वाले मनुष्य का ज्ञान ही तेजस्वी बन जाते हैं, यह ज्ञान के विस्फोट का युग है। आगामी युग की चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए पूर्वोत्तर भारत के विद्यार्थी हिंदी भाषा शिक्षण में भाषा और पाठेतर साधन दोनों के माध्यम से ज्ञान का विस्तार करके ही आगे बढ़ सकते हैं।" डॉ. महीप सिंह का मानना है कि- "पूर्वोत्तर भारत में कौन से लेखक हिंदी में सृजन कार्य कर रहे हैं, उनकी क्या कठिनाइयाँ हैं. इसकी पूरी जानकारी महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान को होनी चाहिए।"

अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी का प्रचार-प्रसार प्रारंभ होने से लेकर अभी तक उसका विकास हो रहा है। राष्ट्र के विकास एवं एकता के लिए हिंदी का विश्व स्तर पर प्रचार-प्रसार होना चाहिए। पूर्वोत्तर की भाषाओं के साहित्य का हिंदी अनुवाद, हिंदी में पुस्तक लेखन, पुस्तक प्रकाशन, शब्दकोश निर्माण, संगोष्ठी, पत्रकारिता, फिल्म, संगीत और रंगमंच आदि से जो हिंदी का विकास हुआ उसमें तीव्रता होनी चाहिए। हिंदी को अधिक रोजगार उन्मुख बनाना चाहिए और हिंदी में सृजन कार्य कर रहे लोगों एवं उनके सृजन कार्य की जानकारी भी होनी चाहिए।

सहायक ग्रंथ सूची :

पुस्तकें

1. पूर्वोत्तर भारत का इतिहास, सदानीरा प्रकाशन, लखनऊ, 1998

2. पूर्वोत्तर भारत लोक और समाज, आलोक सिंह (संपा.), सर्व भाषा ट्रस्ट, 2021
3. हिंदी भाषा की परंपरा प्रयोग और संभावनाएँ, दयानिधि मिश्र (प्रधान संपा), वाणी प्रकाशन।
4. मोदी शाह मंजिल और राह, आर के सिन्हा, प्रभात प्रकाशन, 2020
5. बात बोलेगी हम नहीं, आर के सिन्हा, प्रभात प्रकाशन 2021

पत्रिकाएँ

1. समन्वय पूर्वोत्तर, डॉ. कमल किशोर गोयनका (संरक्षक), प्रो. नंद किशोर पांडेय (प्रधान संपा.), त्रैमासिक पत्रिका, जुलाई- दिसंबर 2019
2. समन्वयपूर्वोत्तर, डॉ. कमलकिशोरगोयनका (संरक्षक), प्रो. नंदकिशोर पांडेय (प्रधानसंपा.), त्रैमासिकपत्रिका, अक्टूबर- दिसंबर 2011
3. नई धारा, डॉ. शिवनारायण (संपा.), द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका, 12 दिसंबर 2014
4. हिंदुस्तानी भाषा भारती, सुधाकर बाबू पाठक (संपा), त्रैमासिक हिंदी पत्रिका, जनवरी जून 2019
5. भाषा (पत्रिका), सितंबर अक्टूबर 2020, द्विमासिक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार।
6. Indian Streams Research Journal] Monthly Multidisciplinary Research Journal) July 2013
7. GYA NKUNJ BBS COLLEGE JOURNAL] Decem- ber] 2018
8. डॉ. अमरनाथ, हिंदी के लिए लड़ने वाला सबसे बड़ा योद्धा महात्मा गांधी, मीडिया मंच।
9. श्रीमती मनोहरमयुम यमुना देवी, मणिपुर के हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय तत्व, राजस्थान साहित्य अकादमी।
10. जाकिर हुसैन, पूर्वाचलीय भाषा, हिंदी और देवनागरी लिपि, प्रयास।